प्रबन्ध का क्षेत्र उद्देश्य एंव महत्व

डा0 नज़ाकत हुसैन
एसोसिएट प्रोफेसर
राजकीय महाविद्यालय
भोजपुर, मुरादाबाद

घोषणा

यह सामग्री विशेष रूप से शिक्षण और सीखने को बढ़ाने के शैक्षणिक उद्देश्य के लिये है। आर्थिक/वाणिज्यिक अथवा किसी अन्य उद्देश्य के लिए इसका उपयोग पूर्णतः प्रतिबन्धित है। सामग्री के उपयोगार्थ इसे किसी ओर के साथ वितरित, प्रसारित या साझा नहीं करेंगें ओर इसका प्रयोग व्यक्तिगत ज्ञान की उन्नति के लिये ही करेंगें। इस ई–कन्टेन्ट में जो जानकारी दी गयी है वह प्रमाणित है और मेरे ज्ञान के अनुसार सर्वोत्तम है।

प्रबन्ध का क्षेत्र

सामान्यतया प्रबन्ध के सिद्धान्त सभी प्रकर के उपक्रमों, उपक्रमों के समस्त विभागों तथा प्रत्येक देश के सभी प्रकार के उपक्रमों पर लागू होते है।

1. प्रबन्ध के सिद्धान्त सभी देशों में छोटे हों या बड़े प्रजातान्त्रिक हो गैर प्रजातान्त्रिक विकसित हो या विकासशाील सभी में अपनाये जा रहे है।

2. यद्यपि प्रबन्ध के सिद्धान्त प्रारम्भ में केवल व्यवसाय तथा उद्याोंगों तक ही सीमित थे परन्तु अब ये सिद्धान्त प्रत्येक प्रकार की संस्था अथवा संगठन में अपनाये जा रहे है।

3. प्रबन्ध के सिद्वान्त किसी भी उद्यम के समस्त विभागों यथा क्रय प्रबन्ध, विक्रय प्रबन्ध, उत्पादन प्रबन्ध, विपणन प्रबन्ध, वित्त प्रबन्ध तथा कर्मचारी प्रबन्ध में समान रूप से उपयोगी होते है।

4. अन्य मौलिक विज्ञानों की भांति प्रबन्ध भी एक विज्ञान है इसमें प्रयोग सिद्व अध्ययनों के आधार पर बहुत सारे सिद्वान्त प्रतिपादित किये गये है, जो अकाट्य है और सभी देशों मे सभी प्रकार के उपक्रमों पर लागू किए जाने योग्य है।

5. प्रबन्ध एक प्रक्रिया है, अतः देश, संस्कृति अथवा आकार से प्रभावित हूए बिना यह सभी संगठित क्रियाओं में लागू होता है।

प्रबन्ध के उद्देश्य एंव महत्व

1. संसाधनों का बेहतर उपयोग सम्भव
2. तकनीकी ज्ञान एंव अविष्कारों का सदुपयोग
3. समाज के विभिन्न पक्षों उपभोक्ता, कर्मचारी, उद्यमी, विनियोक्ता एंव सरकार के लिए लाभकारी
4. बढ़ती हुई औद्योगिक जटिलताओं जैसे विभिन्न उपक्रमों में समन्वय, नित नयी चुनौतियों का सामना, प्रतिस्पर्द्धा का सामना, उर्जा संकट तथा पर्यावरण प्रदूषण आदि समस्याओं का समाधान खोजने में सहायक

5. कम्प्यूटर तकनीक के विकास व उपयोग में सहायक

6. त्रीव प्रतिस्पर्द्धा के इस युग में कुशल प्रबन्ध के कारण न्यूनतम लागत पर उत्पादन किया जाना तथा विज्ञापन एंव विक्रय तकनीकों का प्रयोग कर लाभ को अधिकतम किया जाना सम्भव हो सका है।

7. बड़े आकार के उपक्रमों की स्थापना किया जाना तथा उनका कुशलतापूर्वक संचालन किया जाना सम्भव बनाने में सहायक

8. श्रम सम्बन्धी विभिन्न समस्याओं का समाधान किए जाने में सहायक

9. विभिन्न प्रकार के सामाजिक उत्तरदायित्वों का निर्वाह किए जाने में उद्यमियों की सहायता करना

भारत में प्रबन्ध की आवश्यकता

1. आधारभूत सुविधाओं के विकास के लिए
2. ग्रामीण क्षेत्रों के विकास के लिए
3. बेरोजगारी दूर करने के लिए
4. भूमण्डलीकरण व उदारीकरण की समस्याओं का सामना करने के लिए
5. संसाधनों के पूर्ण सदुपयोग के लिए
6. निर्यात को प्रोत्साहन प्रदान करने के लिए

धन्यवाद

सन्दर्भ ग्रन्थः–

व्यवसायिक प्रबन्ध के सिद्वान्त, डा0 आर. सी. गुप्ता, साहित्य भवन पब्लिकेशन्स, आगरा।